## चपल ननीचोर

व्रज में सब के स्नेह-ममता से पूर्ण होकर बाल-सिंह की तरह दृष्टिसम्पन्न कृष्ण व बलराम बड़े हो रहे थे। क्रमशः वे पौरगण की सहायता से पैरों पर चलने लगे। इसी समय वे श्रीदाम-सुबलादि समवयस्क व्रजबालकगण के सहित यमुना के शुभ्र तट पर कौतुहलवश लुंठित होते थे; कभी तमालादि श्यामवर्ण घना सन्निविष्ट कदम्बकुंज में शोभासमृद्ध कालिन्दी के उपवन में विचरण करते थे। उन सब की बाललीला से गोपगोपीगण के मन में अत्यन्त आनन्द होता था। कृष्ण अपने समवयस्कों के साथ नवनीत और घृत चोरी करते थे।

एकदिन उपनन्द की पत्नी प्रभावती नामक गोपिका ने नन्दमन्दिर में प्रवेश करते हुए यशोदा से कहा– ''हे यशोमती! नवनीत, घृत, दधि, दुग्ध एवं ननी ये सम्पुर्ण द्रव्य में तुम्हारा-मेरा कहकर मैं कुछ प्रभेद नहीं देखती हूँ। तुम्हारी कृपा से मेरा यह सब है। इसलिए मैं कुछ नहीं कह रही हूँ, किन्तु तुम्हारे पुत्र ने चोरी करना कहाँ से सीखा? तुम्हारे ननीचोर पुत्र को तुम स्वयं ही शिक्षा क्यों नहीं देती हो? यदि मैं तुम्हारे पुत्र को शिक्षा देने जाती हूँ तब तुम्हारा धृष्ट तनय गालि देते हुए मेरे गृह से द्रुत दौड़ते हुए भाग जाता है।

देखो यशोदा, व्रजराज नन्द का तनय होकर चोरी करता है, इसीलिए मैं तुम्हारी प्रतिष्ठा के भय से कुछ नहीं कहती हूँ।'' प्रभावती की बात सुनकर यशोदा ने कृष्ण की भर्त्सना करते हुए प्रभावती से कहा– ''मेरे घर में कोटि गौऐं हैं, इन सब के दुग्ध से पर्वत भी अभिषिक्त हो सकता है; फिर भी मेरा पुत्र किस कारण से जो दधि चोरी करता है मैं यह नहीं जानती हूँ, वह तो यहाँ कुछ भी नहीं खाता है। कृष्ण ने जितना दुग्ध-दधि प्रभृति द्रव्य चोरी किया है, उसके समतुल्य तुम मुझसे लेलो। तुम्हारे पुत्र और मेरे पुत्र में कुछ भी भेद नहीं है। इसके पश्चात् कभी भी मेरा कृष्ण यदि नवनीत चोरी करके खाएं तब तदवस्था में अर्थात् नवनीत लिपटे हुए मुँह में उसको मेरे पास लेकर आना, तब मैं उसी समय उसको बाँधकर उचित दण्ड दूँगीं।'' गोपी प्रभावती ने यशोदा से ऐसी बात सुनकर प्रसन्न चित्त होकर निजगृह में प्रस्थान किया।

इसके पश्चात् एकदिन दधि चोरी करने के लिए श्रीकृष्ण वयस्क बालकगण सह गोपी-प्रभावती के घर में गए और गृह प्रांगण के प्राचीर के ऊपर चढ़कर सखागणों के हाथ पकड़ते हुए उन को भी प्रांगण में उठाकर धीरे-धीरे गृह के मध्य प्रविष्ट हुए। कक्ष में प्रवेश कर श्रीकृष्ण ने देखा – सींके के ऊपर दुग्ध है परन्तु वह उनके हाथ के पहुँच से बाहर है। वे ओखली (सरसों कूटने का आधार) और पीढ़ी को एक के ऊपर एक रखते हुए उसके ऊपर बालकों को चढ़ा दिया एवं स्वयं उनसब के ऊपर आरूढ़ हो गये; तथापि उस अतिउच्च जनलभ्य सींके पर स्थापित दुग्ध प्राप्त नहीं कर सके। तब श्रीकृष्ण, श्रीदाम एवं सुबल के सहित उस दधि भांड को दंड द्वारा तोड़ने पर उस भांड से दधि भूमि में गिरने लगा तो उसी में उन सब का मन आकृष्ट हो गया। तब श्रीकृष्ण, बलराम और बालकगण के साथ दधि-पान करने लगे; यह देखकर वानरगण भी उस कक्ष में प्रवेश कर दधि पान करने लगे।

गोपी प्रभावती भांड गिरकर टूटने की ध्वनि पाते ही उस स्थल पर तत्क्षण दौड़ी आई एवं उनको देखते ही गोप बालकगण सभी भाग गये, किन्तु प्रभावती ने कृष्ण का हाथ पकड़ लिया। तब कृष्ण भयभीत होने का भान कर कृत्रिम अश्रू बहाने लगे, प्रभावती ने उस अवस्था में ही उनको पकड़ कर नन्दालय में गमन किया। वहाँ जाने के पश्चात् उन्होंने सर्वप्रथम नन्दराज का दर्शन करते ही अपने माथे पर घुंघट दे दिया। श्रीकृष्ण तब सोचने लगे – ''इसबार और मेरी रक्षा का कोई उपाय नहीं है, माता तो अवश्य ही दंड देगी ही देगी।'' यह बात सोचते-सोचते हठात् कृष्ण को याद आया कि यशोदा मईयाँ ने कहा था कि – ''तुम्हारे पुत्र और मेरे पुत्र में किंचित भी भेद मात्र नहीं है।'' स्वयंभु कृष्ण ने तब प्रभावती के पुत्र का रूप धारण किया। कोपान्वित प्रभावती ने यशोमती के निकट आकर कहा–

''इस बालक ने भांड तोड़कर सारे दधि का पान कर लिया।'' यशोदा ने प्रभावती के पुत्र को देखकर हँसते हुए कहा– ''अपने मुँह से घुंघट को हटाकर फिर इसके अपराध की बात कहो। और यदि वृथा अपवाद कर रही हो तो मेरे गृह से निष्क्रांत हो जाओ। चोरी की है तुम्हारे पुत्र ने और दोष मेरे पुत्र को दे रही हो क्या?'' यह बात सुनकर लोकलाजयुक्त प्रभावती ने तत्क्षणात् घुंघट उन्मोचित करते हुए निज पुत्र का दर्शन कर अवाक्-विस्मय होकर कहा – ''तू निष्पद होकर यहाँ कैसे आ गया? मेरे हाथ में तो कृष्ण था!'' प्रभावती इस प्रकार कहते-कहते निज पुत्र को लेकर नन्दालय से निर्गत हो गयी। तब यशोदा, रोहिणी, नन्द, बलराम एवं गोपगोपीगण ने हास्य भाव में कहा – ''व्रज के अन्याय को एकबार देखो तो!''

दूसरी तरफ, नन्दनन्दन रूपी भगवान श्रीकृष्ण बाहरी पथ पर आते ही निज स्वरूप धारण करते हुए गोपीगण को हँसते-हँसते कहने लगे एवं इस समय उनके भाव में धृष्टता व नयन में चपलतापूर्ण भाव प्रकट हुआ, भगवान कृष्ण ने प्रभावती से कहा – ''हे गोपिके! पुनः कभी भी यदि तुम मुझे पकड़ो तो इस बार तुम्हारे पति का रूप धारण करूँगा, इसमें संशय नहीं है।'' श्रीकृष्ण की ऐसी कठोर धृष्टतामूलक बात सुनकर विस्मिता गोपी प्रभावती अपने गृह में चली गई। तदवधि गृह में कोई भी गोपी लज्जावशतः श्रीकृष्ण को नहीं पकड़ती थी। श्रीकृष्ण भी सकलगोपीयों के घर में अबाध विचरण कर नवनीत चोरी करते थे।

(सहायक ग्रन्थ – गर्ग संहिता)

**–मातृचरणाश्रित मोहित शुक्ल**

## त्रिकालज्ञभाव में श्रीश्रीबाबा

उस समय मैं सॉल्टलेक में निवास करती थी। एकदिन सुबह श्रीश्रीबाबा मेरे घर पर आये थे। मेरे पूजाकक्ष में अर्द्धशायित अवस्था में वे विश्राम ले रहे थे और मेरे ठाकुर के आसन की नित्य सेवा जो परम्परागत रूप से चली आ रही थी, उसे देख रहे थे एवं मुझसे नाना विषयों से संबंधित प्रश्न कर रहे थे। बातों बातों में श्रीश्रीबाबा ने कहा– ''निताइबाबा त्रिकालज्ञ ऋषि थे। कहो तो 'त्रिकालज्ञ' कहने से क्या समझा जाता है?'' मैंने उत्तर दे दिया। त्रिकालज्ञता की व्याख्या करते हुए बहुत से महात्माओं के पूर्वजन्म के बारे में बातचीत होने लगी। श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी महाशय 'महात्मा कबीर' थे या नहीं, इस विषय पर पूछने से श्रीश्रीबाबा ने कहा– ''हंड्रेड पर्सेन्ट थे। मैं इस विषय में निःसन्देह हूँ।'' तत्पश्चात् श्रीश्रीबाबा ने खुद ही मुझ से पूछा– ''कहो तो गुरु नानक कौन थे?'' यह प्रश्न सुनते ही मेरे मन में श्रीश्रीनांगाबाबा का स्मरण हुआ। परन्तु श्रीश्रीबाबा के श्रीमुख से ही मैं इस सत्य के बारे में सुनना चाहती थी, इसलिए मैंने कहा–''गुरु नानकदेव भी क्या लाहिड़ी महाशय थे?'' मेरे मुख से यह बात सुनने मात्र से ही श्रीश्रीबाबा सीधे उठ बैठे एवं उन्होंने तुरन्त कहा–''नहीं, नहीं, यह ठीक नहीं है, ठीक से कहो।'' मेरे निश्चुप रहने से श्रीश्रीबाबा ने श्रीश्रीनांगाबाबा के फोटो की ओर अंगुलि द्वारा संकेत करते हुए कहा– ''वह देखो, वे हैं गुरु नानकदेव।'' इसके बाद कहा– ''तुमने भूल क्यों बताया?'' यह सुनकर मेरे चुप रहने पर चुपचाप कुछ समय चिन्तन करते हुए मेरी तरफ देखते हुए हँसकर कहा– ''ओह, तो यह कारण है! मेरे मुख से कहलवाने के लिए बाध्य करना! या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः। तुम ने चालाकी की, अच्छा!'' मैंने तत्क्षणात् उनके रातुल चरणों में निःशब्द प्रणाम किया। इस दिन बहुत महापुरुषों के पूर्वजन्म के विषय में श्रीश्रीबाबा के साथ मेरा कथोपकथन हुआ था। श्रीश्रीनांगाबाबा की उम्र जो तीन कल्प अतिक्रम कर चुकी थी एवं चौथा कल्प चल रहा था, यह भी श्रीश्रीबाबा ने उस दिन मुझे बताया था। गुरु नानकदेव ही जो श्रीरामलीला में मिथिलाधिपति विदेह राज राजर्षि जनक सीता देवी के पिता थे, इस बात से भी श्रीश्रीबाबा ने मुझे अवगत करवाया था। कालान्तर में श्रीविजय कृष्ण गोस्वामी प्रभु के कथामृत के मध्य इस विषय का उल्लेख पाया गया था।

श्रीश्रीबाबा

–श्रीश्रीमाँ के 'तवास्मि' ग्रंथ से उद्धृत

**–हिन्दी अनुवादः मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख**